एक ख़्वाब किनारों पर

अंकिता राय

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

Mobile no 9839805235

Email: iamankitacool235@gmail.com

चांद की चमचमाती चांदनी लिए
ये लहरों की बस्ती, है हवा कुछ हसीं और खुशबुओं में मस्ती,
जिंदगी की कस्ती यू गोते खाए
जब भी मन इस कल कल स्वर में समाए,
ये हसीं चांदनी इन लहरों पर ऐसे हर्षाए
जैसे बच्चे को मां अपनी आंचल में सुलाए,
सुकून से बैठे मैं और मेरे ख्वाब इन किनारों पर
ये समंदर की नगरी मुझे खूब भाए,
पर डर लगता है, इन लहरों से प्यार ना हो जाए
ये आवाज दे मुझे और मेरे कदम रुक न पाए,
समंदर की गोद में जब भी तू समाए
किनारों की तरह तुझे मेरी भी याद आए,
तुझे देख कर यू मन आशाओं से भर जाए
जब तू फिर हिलोरे लेकर किनारों पर आए,
बैठी रहूँ कुछ उम्मीद लेकर इन किनारों पर
तू फिर आए तेरी मस्तियों से मुझे भिगाए,
ये तेरा मेरा रिश्ता कुछ यू गहरा हो जाए
मैं तेरी याद बन जाऊ और तू मेरे दिल में समाए।